— उपसंहार —

## उपसंहार

श्रीलाल शुक्ल बहुमुखी प्रतिभा से संपन्न साहित्यकार है। उन्होंने अपनी रचनाओं में बहुमुखी प्रतिभा का दर्शन किया है। "राग-दरबारी" यह एक उनकी सुप्रसिध्द व्यंग्यात्मक रचना है। जिसको "साहित्य अकादमी पुरस्कार" प्राप्त हो चुका है। "राग-दरबारी" उपन्यास भारतीय जीवन का बृहद संग्रह है। जिसमें स्वातंत्र्योत्तर भारतीय समाज की आस्थाओं, विघटनामुखी जीवनदर्शी, बदलती हुई अनैतिक मनोवृत्ति, बदलते हुए परिप्रेक्ष्यों में उभरते खण्डित चरित्रों की समर्थ भावनाओं का प्रभावशाली चरित्रांकन हुआ है।

प्रथम अध्याय -- में श्रीलाल शुक्ल के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का अध्ययन करने से यह पता चलता है कि, श्रीलाल जी का व्यक्तित्व विविधमुखी है। अपने प्रारंभिक जीवन में उन्हें अनेक कठिनाइयों का सामना करना पडा। उनके जीवन में संघर्ष अधिक है। जीवनयापन चलाने के लिए उन्होंने सरकारी नोकरी में प्रवेश किया। सरकारी नौकरी में रहते हुए उन्होंने अपने लेखन कार्य का प्रारंभ किया। श्रीलाल शुक्ल जी नौकरी में व्यस्त रहते हुए भी वे किसी न किसी प्रकार से साहित्य सेवा करते रहे है। उनकी नौकरीयों का क्षेत्र अधिकतर साहित्य से संबंधित ही दिखाई देता है। उनके बचपन के दोस्त अधिकतर साहित्यकार ही थे। शुक्ल जी को इनसे भी साहित्य लेखन के लिए अधिक प्रेरणा मिली। अत: उनके साहित्यपर उनके व्यक्तित्व की स्पष्ट छाप दिखाई देती है।

द्वितीय अध्याय - में "राग-दरबारी" उपन्यास की कथावस्तु का संक्षेप में विवेचन किया गया है। इस उपन्यास की कथावस्तु "शिवपालगंज" नामक गाँव के आस-पास ही घूमती है। इस उपन्यास में "शिवपालगंज" को केंद्र में रखकर विविध ग्रामीण सामाजिक समस्याओं का लेखा-जोखा प्रस्तुत किया है। यह एक ग्रामीण समस्याप्रधान उपन्यास है।

तृतीय अध्याय - में "राग-दरबारी" उपन्यास के पात्रों का परिचय दिया है। "राग-दरबारी" ग्रामीण-सामाजिक उपन्यास होने के कारण इसमें अनेक स्तर के पात्र है। रंगनाथ इस उपन्यास का प्रमुख पात्र है। इस उपन्यास का केंद्रिय पात्र वैद्यजी ही है। उपन्यास में आनेवाला परिवर्तन वैद्यजी के कारण ही है। शुक्ल जी ने पात्रों के माध्यम से विविध ग्रामीण सामाजिक समस्याओं का लेखा-जोखा प्रस्तुत किया है।

चतुर्थ अध्याय - में "राग-दरबारी" उपन्यास में चित्रित कथोपकथन और देशकाल वातावरण का परिचय दिया है। उपन्यासकारने उद्देशमूर्ती में सफलता प्राप्त करने के लिए कथोपकथानों में रोचकता, संभवता, संक्षिप्तता और सरसता दिखाई है। साथ ही साथ देशकाल वातावरण का चित्रण भी कथावस्तु तथा पात्रों के अनुरूप ही किया है।

पंचम अध्याय - में "राग-दरबारी" में चित्रीत भाषाशैली का परिचय दिया है। "राग-दरबारी" की भाषा सरल, स्पष्ट तथा विषय के अनुकुल है। शुक्ल जी की यह रचना व्यंग्यात्मक होने के कारण इसमें व्यंग्यप्रधान शैली का प्रयोग किया है। उनके साथ ही साथ प्रसंगानुरूप शैली वैविध्य पाया जाता है।

अनुसंधान की उपलब्धियाँ --

श्रीलाल शुक्ल जी के "राग-दरबारी" उपन्यास का अनुसंधान करते समय मेरे मन में तीन प्रश्न खडे हो गये थे, जिनका विवेचन प्रस्तावना में मैंने किया है। अब "राग-दरबारी" उपन्यास का अनुसंधान पुरा होने के बाद उन प्रश्नों के उत्तर मुझे मिले है।

उन प्रश्नों के उत्तर निम्न रूप में दिया जा रहा है।

प्रश्न १ — "राग-दरबारी" शीर्षक का अर्थ क्या है ?

उत्तर -- श्रीलाल शुक्ल द्वारा लिखित "राग-दरबारी" एक ग्रामीण सामाजिक-समस्याप्रधान उपन्यास है। इस उपन्यास में श्रीलाल शुक्ल ने "शिवपालगंज" इस गाँव को कथा-केंद्र में रखकर विविध सामाजिक समस्याओंपर व्यंग्य प्रहार किया है।

"राग-दरबारी" शीर्षक का अर्थ सरल तथा स्पष्ट है। इस उपन्यास में शिवपालगंज गाँव का चित्रण है, जिस गाँव के प्रमुख नेता वैद्यजी है। वैद्यजी "शिवपालगंज" के सब-कुछ है। वे छंगामल इंटरमीडिएट कालेज के अध्यक्ष, को-आपरेटिव युनियन के मैनेजिंग डाइरेक्टर तथा उस गाँव ग्राम-सभा के प्रधान है। शिवपालगंज में होनेवाला परिवर्तन वैद्यजी के मतानुसार ही होता है। वे अनेक पदोंपर आसक्त थे, वें इन पदों को छोड़ना नही चाहते थे। अपने दो पुत्र रूप्पन और बद्री पहलवान उनके कार्यों में मदत करते थे। कालेज का प्रिंसिपल उनका ही चेला था। जोगनाथ जैसे अनेक गुंडे लोग भी उनके साथ थे। सनीचर नामक युवक भी तैयार करने के लिए और चापलुसी करने में उस्ताद था। चुनाव के समय में भी गुंडागर्दी करनेवाले उनके अनेक लोग थे। सरकारी अधिकारीयों की छाया वैद्यजी पर थी। सरकारी कार्यालय, पुलिसथाना, तहसील कार्यालय, शिक्षा-समिति विभाग के अधिकारी आदि में उनका प्रभाव था।

इन सभी माध्यमों की सहाय्यता से वैद्यजी शिवपालगंज पर राज्य कर रहे थे। उनसे संघर्ष करने की शक्ति किसी में नहीं थी। रामाधीन भीखमखेड़वी वैद्यजी का विरोधी था, जो एक मुद्दे का खिलाड़ी था।

अत: कहा जा सकता है कि, "शिवपालगंज" गाँव में वैद्यजी का ही दरबार था, और उनके अनुयायी उस दरबार के सदस्य थे। वैद्यजी तथा उनके दरबारियों में एक ही राग था, भ्रष्ट राजनीति। "शिवपालगंज" गाँव में सिर्फ वैद्यजी के दरबारियोंका ही राज्य था। इसलिए श्रीलाल शुक्ल जी ने इस उपन्यास को "राग-दरबारी" यह शीर्षक दिया है।

इस प्रकार "राग-दरबारी" का अर्थ है - वैद्यजी का दरबार और उनके अनुयायी है दरबारी। उन सभी लोगों में एक ही राग सुनायी देता है।

प्रश्न २ — क्या "राग-दरबारी" सफल व्यंग्यात्मक उपन्यास है?

उत्तर — श्रीलाल शुक्ल कृत "राग-दरबारी" को एक सफल व्यंग्यात्मक उपन्यास कहा जा सकता है। उसका कारण यह है कि उपन्यास-कारने इस उपन्यास में "शिवपालगंज" इस गाँव को कथाकेंद्र में रखकर विविध ग्रामीण-सामाजिक समस्याओंपर व्यंग्य प्रहार किया है।

श्रीलाल शुक्ल जी का उद्देश्य विविध सामाजिक समस्याओंपर व्यंग्य प्रहार करना है। शुक्ल जी ने "राग-दरबारी" उपन्यास के माध्यम से भारतीय विविध ग्रामीण समस्याओं का लेखा-जोखा प्रस्तुत किया है। शुक्ल जी का व्यंग्य तेवर बहुत व्यापक है। उन्होंने ग्रामीण समाज की हर स्थिति को अपने व्यंग्य का विषय बनाया है।

भारतीय ग्रामीण जीवन में व्याप्त राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, तथा शैक्षणिक समस्याओंपर शुक्ल जी ने करारा व्यंग्य किया है। यह उत्कृष्ट व्यंग्यात्मक रचना है। श्रीलाल शुक्ल जी ने शिवपालगंज में स्थित सभी समस्याओं को अपने व्यंग्य का विषय बनाया है। उनका यह उपन्यास व्यंग्यात्मक शैली में लिखा गया है। श्रीलाल शुक्ल जी का उद्देश ग्रामीण समाज में अवस्थित हर स्थितियों पर व्यंग्य करना है। "शिवपालगंज" की राजनैतिक झटापटी की स्थिति का पर्दाफाश किया है। शिक्षा-प्रणाली पर भी तीव्र व्यंग्य किया है।

अत: कहाजा सकता है कि, श्रीलाल शुक्ल द्वारा लिखित "राग-दरबारी" एक सफल व्यंग्यात्मक उपन्यास है।

प्रश्न ३ - "राग-दरबारी" उपन्यास में किन समस्याओं का चित्रण हुआ है?

उत्तर — श्रीलाल शुक्ल जी का "राग-दरबारी" उपन्यास एक समस्याप्रधान उपन्यास है। श्रीलाल शुक्ल जीनेइस उपन्यास में विविध समस्याओं का लेखा-जोखा प्रस्तुत किया है।

"राग-दरबारी" में चित्रित समस्यायें निम्न लिखित है।

१) ग्रामीण सामाजिक समस्या ।

२) राजनीतिक समस्या ।

३) आर्थिक समस्या ।

४) शैक्षणिक समस्या ।

अतः श्रीलाल शुक्ल जी ने "राग-दरबारी" उपन्यास में उपरालिखित समस्याओं का चित्रण किया है। ग्रामीण जीवन में अवस्थित अंधविश्वास, रूढ़ी, परम्परा, गुंडागर्दी, मूर्ति-पुजा, गाँव का गन्दा वातारवण आदि के कारण निर्मित समस्याओं का चित्रण किया है। उत्पादनों का अभाव होने के कारण परिवार में आनेवाली आर्थिक विषमताओं का चित्रण भी "राग-दरबारी" में मिलता है। "शिवपालगंज" गाँव की अवस्थित शिक्षा सम्बन्धि समस्या का उद्घाटन "छंगामल कॉलेज के माध्यम से किया है। छात्रों में बढ़ती अनुशासनहीन प्रवृत्ति, अध्यापकों में गुटबन्दी और अत्याचार की प्रवृत्ति का सही चित्रण हुआ है।

"राग-दरबारी" की प्रमुख समस्या राजनीतिक है। वैद्यजी के माध्यम से शुक्ल जी ने वर्तमान कालिन नेता लोगों की भ्रष्ट नीति का सही चित्रण किया है। वैद्यजी उस गाँव के प्रमुख ही नहीं बल्कि सब-कुछ है। भ्रष्ट राजनीति से उन्होंने गाँव पंगु बना दिया है। उनके हाथ में अनेक पद है और उन पदों पर कायम रहने के लिए उनके पास राजनीतिक दावपेंच है। एक दृष्टि से उनके पास राजनीतिक छल है।

इसप्रकार "राग-दरबारी" में "शिवपालगंज" के माध्यम से वर्तमान कालिन सामाजिक, आर्थिक, शैक्षणिक तथा राजनीतिक समस्याओं का लेखा-जोखा प्रस्तुत किया है।

"श्रीलाल शुक्ल का "राग-दरबारी" उपन्यास एक ग्रामीण-सामाजिक तथा व्यंग्यात्मक उपन्यास है।"

अनुसंधान की नई दिशाएँ :-

१) "राग-दरबारी" उपन्यास में चित्रित ग्रामीण जीवन।"

२) "राग-दरबारी" उपन्यास में चित्रित समस्याओं का मुल्यांकन।"

आदि विषयों को लेकर अनुसंधान किया जा सकता है।

.....

## - संदर्भ ग्रंथ सूची -


१) डॉ॰ कल्ला नंदलाल -- "व्यंग्यात्मक उपन्यास तथा "राग-दरबारी"",
अमित प्रकाशन, जोधपुर - संस्करण १९९० इ॰ ।

२) डॉ॰ गुप्त ज्ञानचंद -- "स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यास और ग्राम चेतना"
अभिनव प्रकाशन, दिल्ली - संस्करण, १९७४ इ॰ ।

३) डॉ॰ त्रिगुणायत गोविंद -- "शास्त्रीय समीक्षा के सिध्दान्त"
एस चन्द अॅण्ड कंपनी, दिल्ली - संस्करण १९६८ इ॰।

४) डॉ॰ मुदगल वसंत शंकर -- "हिन्दी के महाकाव्यात्मक उपन्यास"
चन्द्रलोक प्रकाशन, कानपुर, १९९२ इ॰ ।

५) डॉ॰ मिश्र रामदरश -- "हिन्दी उपन्यास : एक अन्तर्यात्रा"
राजकमल प्रकाशन, दिल्ली - संस्कारण १९६८ इ॰ ।

६) डॉ॰ मिश्र सरजुप्रसाद -- "हिन्दी के सात उपन्यास"
अजब पुस्तकालय, कोल्हापुर - संस्कारण १९७७ ।

७) डॉ॰ मिश्र भगिरथ -- "काव्यशास्त्र"
विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणशी - संस्कारण १९८४ इ॰।

८) डॉ॰ शर्मा गिरिधर -- "हिन्दी के उपन्यासों का मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन"
इन्द्रप्रस्थ,प्रकाशन, दिल्ली - संस्कारण १९७८ इ॰।

९) शुक्ल श्रीलाल -- "राग-दरबारी"
राजकमल प्रकाशन, दिल्ली - संस्करण १९६८ इ॰ ।

१०) डॉ॰ सोनवणे चन्द्रभानू -- "हिन्दी उपन्यास - विविध आयाम"
पुस्तक संस्थान, कानपुर - संस्करण १९७७ इ॰ ।


.....

BARR. BALASAHEB K... SHIVAJI UNIVER... LIBRARY